शोध प्रबन्ध – सार

महाकवि तुलसीदास का योगदान मध्यकालीन साहित्य के क्षेत्र में अतुलनीय है। महाकवि तुलसीदास ने बाल्मीकि रामायण को आधार बनाकर रामचरित्रमानस की रचना की, जिसका मुख्य उद्देश्य श्रीराम की मंगलदायक झाँकी दिखाना और अपने इष्ट राजा राम के उद्वांत चरित्र का उद्घाटन कर जगमंगल करना ही है। तुलसी मुख्यतः भक्त हैं, उनके समस्त विचारों पर भक्ति का पावन आवरण आच्छादित है। साहित्य का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है,जिसमें सभी विषयों का समावेश मिलता है और गोस्वामी जी ऐसी ही दिव्य विभूति थे। जिनका लक्ष्य जीवन का सर्वागीण विकास था।

महाकवि तुलसीदास जी ने अपने महाकाव्य में तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों का चित्रण किया है, परन्तु महाकवि का अध्ययन अभी तक मुख्यतः भक्ति और साहित्य के क्षेत्र में हुआ है। अन्य क्षेत्रों में अध्ययन का अभाव है, जिसके कारण इतिहास के क्षेत्र में तुलसी काव्य का योगदान नैगण्य सा प्रतीत होता है, जबकि ऐसा नहीं है।

इस संदर्भ में यह शोध कार्य प्रस्तुत किया गया है, जिसका उद्देश्य तुलसी काव्य का इतिहास के क्षेत्र में क्या योगदान रहा है? का अध्ययन करना है। इस शोध कार्य को पूर्ण करने में तुलसी की रचनाओं के साथ–साथ प्राचीन भारतीय, वाड़मयी रचनाओं का भी अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य सात अध्यायों में विभक्त है।

तुलसी काव्य का इतिहास में योगदान, सामाजिक उत्थान के संदर्भ में शीर्षक के इस शोध कार्य के लिए मैं सर्वप्रथम आदरणीय अपने परम पूज्य गुरू एवं शोध निर्देशिका, डा0 प्रतिभा गुप्ता जी के प्रति अपना सहृदय आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके निरन्तर मार्गदर्शन, निरीक्षण व सहानुभूतिपूर्ण प्रोत्साहन से मैं अपना कार्य प्रस्तुत करने में सक्षम हो सका हूँ।

मैं डा0 अंशू सिंह, इतिहास विभागध्यक्षा व डा0 राजेश गर्ग वरिष्ठ प्रवक्ता, डी०ए०वी० स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बुलन्दशहर के प्रति विशेष आभार प्रकट करता हूँ। जिनके निरन्तर प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन से यह शोध कार्य पूर्ण हुआ है।

मैं इस शोध कार्य में सत्त विशेष सहयोग के लिए डा0 सोरन सिंह, शास्त्री जी पूर्व विभागाध्यक्ष (हिन्दी) डा० आशा रानी शर्मा हिन्दी विभागध्यक्षा व डा० रानीबाला गौड़, डी०ए०वी० स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बुलन्दशहर के प्रति अत्यन्त कृतज्ञ हूँ।

शोध सामग्री के लिए चौ0 चरण सिंह पुस्तकालय, मेरठ भारतीय राष्ट्र अभि० दिल्ली व अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय पुस्कालय, अलीगढ़ व हिन्दी साहित्य परिषद, बुलन्दशहर तथा डी०ए०वी० स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पुस्तकालयाध्यक्ष एवं कर्मचारीगण का आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने शोध सामग्री संकलन में मेरा सहयोग किया है। इसके अन्तर्गत उन विद्वानों का आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके ग्रन्थों व पुस्तकों का अध्ययन मैंने इस शोध कार्य में किया है।

इस शोध ग्रन्थ को पूर्णतयाः प्रदान करने का सर्वाधिक श्रेय मेरे पूज्य माता–पिता श्री वीर सिंह सोलंकी (प्रधानाचार्य) एवं श्रीमती विमला देवी को है, जिनके प्रोत्साहन से यह कार्य सम्पन्न हो सका। इसके अतिरिक्त मेरे इस शोध कार्य में भाई आकाश कुमार, निखिल, शिवदेश, विपिन तथा साथ ही अरूण प्रताप, रविन्द्र चौधरी, रीना सैनी, हरीश कुमार का विशेष आभारी हूँ।

इस शोध कार्य में टंकण कार्य के लिए अमित चौधरी, विनोद चौधरी, ज़हीर खान, ललित शर्मा, तनूज शर्मा आदि का आभार व्यक्त करता हूँ।

"तुलसी काव्य का इतिहास में योगदान (सामाजिक उत्थान के सन्दर्भ)"

शोध प्रबन्ध – सार

महाकवि तुलसीदास का योगदान मध्यकालीन साहित्य के क्षेत्र में अतुलनीय है। महाकवि तुलसीदास ने बाल्मीकि रामायण को आधार बनाकर रामचरित्रमानस की रचना की, जिसका मुख्य उद्देश्य श्रीराम की मंगलदायक झाँकी दिखाना और अपने इष्ट राजा राम के उद्वांत चरित्र का उद्घाटन कर जगमंगल करना ही है। तुलसी मुख्यतः भक्त हैं, उनके समस्त विचारों पर भक्ति का पावन आवरण आच्छादित है। साहित्य का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है,जिसमें सभी विषयों का समावेश मिलता है और गोस्वामी जी ऐसी ही दिव्य विभूति थे। जिनका लक्ष्य जीवन का सर्वागीण विकास था।

महाकवि तुलसीदास जी ने अपने महाकाव्य में तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों का चित्रण किया है, परन्तु महाकवि का अध्ययन अभी तक मुख्यतः भक्ति और साहित्य के क्षेत्र में हुआ है। अन्य क्षेत्रों में अध्ययन का अभाव है, जिसके कारण इतिहास के क्षेत्र में तुलसी काव्य का योगदान नैगण्य सा प्रतीत होता है, जबकि ऐसा नहीं है।

इस संदर्भ में यह शोध कार्य प्रस्तुत किया गया है, जिसका उद्देश्य तुलसी काव्य का इतिहास के क्षेत्र में क्या योगदान रहा है? का अध्ययन करना है। इस शोध कार्य को पूर्ण करने में तुलसी की रचनाओं के साथ–साथ प्राचीन भारतीय, वाड़मयी रचनाओं का भी अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य सात अध्यायों में विभक्त है।

प्रथम अध्याय में इतिहास का अर्थ एवं स्वरूप का अध्ययन एवं

विश्लेषण किया गया है। इतिहास के अध्ययन की उपादेयता के सम्बन्ध में मतभेद है। किन्तु अतीत का अध्ययन स्वयं में एक रोचक और आवश्यक विषय है। इसके अन्तर्गत इतिहास शब्द का अर्थ एवं उसकी उपयोगिता का अध्ययन किया गया है इसके साथ ही साहित्य एवं इतिहास का आपस में क्या सम्बन्ध है? प्रस्तुत किया गया है। इतिहास के विभिन्न तत्वों का अध्ययन इस अध्याय की प्रमुख विषय वस्तु है।

तुलसीदास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन द्वितीय अध्याय की विषय–वस्तु है। गोस्वामी तुलसीदासजी ने अपने विषय में कुछ नहीं लिखा है, फिर भी अंतः साक्ष्य, वाह्य साक्ष्य एवं जनश्रूति आदि के सहारे वैज्ञानिक एवं ऐतिहासिक अनुसंधानों से उनके जीवन की रूपरेखा प्रस्तुत कर दी है। इस अध्याय के अन्तर्गत तुलसीदास जी का बाहरी व्यक्तित्व, आंतरिक व्यक्तित्व, भक्ति स्वरूप आदि का अध्ययन किया गया है।

तृतीय अध्याय में तुलसी के काव्य में राजा एवं राजनीति का स्वरूप का अध्ययन किया गया है। साहित्य और राजनीति, राजा का निर्वाचन, राजा के गुण एवं कर्त्तव्य, राजा–प्रजा का संबंध, मंत्री, सेना, आर्थिक नीति, विदेश नीति, गुप्तचर व्यवस्था, न्याय व्यवस्था, कर व्यवस्था, सैन्य व्यवस्था आदि इस अध्याय के महत्वपूर्ण विषय–वस्तु हैं।

चतुर्थ अध्याय में तुलसी के काव्य में धर्म और नीति का स्वरूप का अध्ययन किया गया है। इसके अन्तर्गत धर्म का अर्थ, स्वरूप, साहित्य एवं धर्म का सम्बन्ध, तुलसी काव्य में धर्म का स्वरूप, ईश्वर आस्था, देवी–देवता, मंदिर, तीर्थ, नीति का स्वरूप, सत्य, अंहिसा, परोपकार, पारिवारिक नीति, सामाजिक नीति, आर्थिक नीति, राजनीति आदि का अध्ययन किया गया है।

तुलसी के काव्य में सामाजिक व्यवस्था का स्वरूप, पंचम अध्याय की

विषय–वस्तु है। गोस्वामी जी ने अपने चारों ओर जो समाज देखा वह कहने को तो जीवित था, परन्तु वास्तव में मृत प्राय था। तुलसीदास ने जो कलियुग का वर्णन किया है, वह पूर्णतः पौराणिक आधार पर है। इस अध्याय में सामाजिक व्यवस्था, पारिवारिक जीवन, स्त्री–पुरूष का संबंध, वर्ण व्यवस्था, समाज में नारी का स्थान आदि का अध्ययन किया गया है।

छठे अध्याय में तुलसी काव्य में संस्कृति के स्वरूप का अध्ययन किया गया है। गोस्वामी जी का अध्ययन अति व्यापक था और उसमें समन्वय की भावना थी। संस्कृति का अर्थ, स्वरूप, परिभाषा, क्षेत्र आदि इस अध्याय के मुख्य विषय हैं। इस अध्याय में साहित्य एवं संस्कृति का सम्बन्ध दिखाया गया है। साथ ही तुलसी काव्य में संस्कृति को स्थान भी निर्दिष्ट किया गया है।

सातवां एवं अंतिम अध्याय इस शोध कार्य का निष्कर्ष हैं, इसमें साहित्यिक अध्याय के आधार पर इतिहास के परिप्रेक्ष्य में तुलसी काव्य का मूल्यांकन एवं विश्लेषण किया गया है।

इतिहास के क्षेत्र में उनका योगदान अतुलनीय है। तुलसीदास जी ने अपने साहित्य के माध्यम से तत्कालीन राजनैतिक व्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था, धार्मिक व्यवस्था आदि का वर्णन किया है जो अपने आप में महत्वपूर्ण है। निःसंदेह तुलसीदास जी मूलतः भक्त हैं, परन्तु भक्त होने के साथ–साथ वे उच्च कोटि के विचारक भी हैं। तुलसीदास का व्यक्तित्व बहुआयामी था। तुलसीदास के चित्रों की आकृतियों तथा उनकी निजि कृतियों और रचित ग्रन्थों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गोस्वामी तुलसीदास जी का व्यक्तित्व अत्यन्त प्रभावशाली रहा होगा। गोस्वामी जी का आविभार्व ऐसे युग में हुआ जब पठानों अर्थात् लोदी वंश के शासन का अंत हो रहा था और मुगल शासक अपनी जड़ मजबूत कर रहे थे। तुलसी अपने युग से प्रभावित हुए और उन्होंने अपने युग को

भी प्रभावित किया। तुलसीदास जी जैसे महापुरूष के विचार, अनुभव और युग का चेतन मानव समाज को अनन्तकाल तक प्रभावित एवं प्रेरित करता रहेगा। तुलसीदास का महान व्यक्तित्व अपने युग से अटूट संबंध रखता है। मर्यादा तुलसीदास के व्यक्तित्व की ज्योति थी। तुलसीदास जी ने अपने दीर्घ जीवन में वृहत साहित्य का लेखन किया जिसमें 13 रचनायें प्रमाणिक मानी गयी है जिनमे रामचरित्रमानस, विनयपत्रिका, कवितावली,गीतावली,दोहावली, आदि मुख्य हैं। गोस्वामी जी ने आदि कवि बाल्मीकि की रचना 'रामायण' को अपनी रामकथा का आधार माना है। बाल्मीकि के विचारों एवं उनके कथा विन्यास के स्वरूप से तुलसी जी प्रभावित दिखाई पड़ते हैं।

हिन्दी साहित्य की दृष्टि से मुगल–युग को सुवर्णोय काल माना जाता है। हिन्दी साहित्य का यह साहित्य प्रधानतया धार्मिक था। तुलसी का साहित्य श्रेष्ठ राज्य का स्वरूप प्रस्तुत करता है। तुलसी साहित्य में राजनीति सर्वत्र भक्ति एवं साहित्यिक के झीने आवरण में से झाँक रही हैं। रामचरित्रमानस तुलसी के राजनीतिक विचारों की अनमोल निधि है, जिसमें आदि, मध्य, अंत अर्थात् बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड और उत्तरकाण्ड को भक्ति के साथ–साथ राजनैतिक स्वरूप की व्याख्या कहें तो अतिश्योक्ति न होगी। मानस में भक्ति तो है ही, इसके साथ ही राजनैतिक वातावरण भी दृष्टिगोचर होते हैं। मानस में राजनीति भक्ति में विलीन हो गयी है। इसके साथ ही नीति और राजनीति दोनों भक्ति से परिचालित हुए हैं। रामरत्न भटनागर के अनुसार–' मानस में राजनीति का स्थान धर्म ने ले लिया है, जो अपने आप में तर्कसंगत नहीं है, क्योंकि जहाँ–जहाँ मानस में राजनीति के सिद्धांत आये हैं, वे प्रसागिंक हैं और इसका कारण यही है कि रामचन्द्र राजा भी थे। गोस्वामी जी ने उनके आदर्श राज्य का वर्णन किया है और इसी प्रसंग में उन्हें राजनीतिक, सामान्य सिद्धांत भी रखने पड़े हैं। पाठक

तुलसीदास जी की अनूठी काव्य कल्पना, भाषा पर अनन्य अधिकार के साथ–साथ राजनीति की विशुद्ध व्याख्या देख विस्मय हो जाना है। प्रस्तुत शोध कार्य यह सिद्ध करना है कि तुलसी एक साथ सबकुछ हैं वह भक्त हैं, कवि हैं। समाज सुधारक हैं, दार्शनिक है और उच्च कोटि के राजनीतिक भी हैं।

धर्म प्रधान भारत के प्रत्येक सांस्कृतिक क्षेत्र में धर्म की प्रमुखता रही है। यहाँ सदा यह विश्वास रहा है कि सब प्रकार की सम्पत्तियाँ धर्मशील व्यक्ति के पास ही जाती हैं। प्राचीन भारत में भी यही धारणा थी कि मध्यकालीन भारत में भी यही धारणा थी और आज तक भी यही है। तुलसीदास ने अपने साहित्य में जिस समन्वित धर्म का रूप वर्णित किया है, उसकी उस समय अत्यन्त आवश्यकता थी। उनके समस्त साहित्य में विशेषतः भक्त स्वभाव वर्णन, धर्मरथ वर्णन, स्वामी, राजा–प्रजा, आदि सम्बन्धों का सजीव चित्रण किया है। तुलसी साहित्य में हमें विभिन्न स्थानों पर धर्म का उल्लेख मिल जाता हैं तुलसी के अनुसार धर्म की परीक्षा संकट में होती है कि व्यक्ति धर्म में कितनी आस्था रखता है। इनके अनुसार धर्म के लिए श्रृद्धा–विश्वास का होना भी वांछनीय है, धर्म विश्वास पर ही आधारित है। तुलसी काव्य में परोपकार के सर्वश्रेष्ठ धर्म कहा गया है एवं दूसरों का हित ही परोपकार कहलाता है। गोस्वामी जी ने नारी धर्म की भी सफल स्थापना की है और समाज के लिए उसे अतिशय उपदेश माना है। इनके अनुसार रीति, प्रीति ओर धर्म की पालिका स्त्री है एवं उसका एकमात्र धर्म पति की सेवा करना ही है।

भारतीय साहित्य में नीति का प्रयोग अति प्राचीनकाल से होता रहा है। इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं कि जीवन का सम्पूर्ण विकास किसी न किसी नीति का ही परिणाम है। मानस में भी नीति का महत्वपूर्ण स्थान है। राम का बनवास जाना, दशरथ का प्राण त्याग का कारण, उनका सत्य पर अविचलित होकर

टिके रहना ही है। तुलसीदास ने सत्य पर विशेष बल दिया है एवं अहिंसा को परम धर्म स्वीकार करते हैं। मानस में पारिवारिक नीति के माध्यम से माता–पिता के सम्बन्धों पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही भ्रात सम्बन्धी नीति का भी उल्लेख तुलसी काव्य में हुआ है। निष्कर्षतः हम कह सकते है कि तुलसी काव्य में धर्म और नीति का विविध रूप में चित्रण किया गया है, जो व्यवहारिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

तुलसी काव्य में सामाजिक व्यवस्था का विषद वर्णन देखने को मिलता है। तुलसी ने अपने काव्य में सामाजिक व्यवस्था के विभिन्न तत्वों यथा सामाजिक वर्ग, पारिवारिक जीवन, स्त्री–पुरूष संबंध, वैवाहिक पद्वति, वेशभूषा, खान–पान आदि का वर्णन किया है। तुलसीदास के काव्यमयी रचनाओं में पारिवारिक जीवन की स्पष्ट झलक मिलती है। तुलसी काव्य के अनुशीलन से यह स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने भारतीय पारिवारिक जीवन को चित्रित करने का सफल प्रयास किया है। पारिवारिक जीवन में सुचारूता स्थापित करने के लिए तुलसीदास स्त्री–पुरूष के मूल में श्रृद्धा–विश्वास की भावना प्रकट करने की चेष्टा करते हैं। तुलसी की यह धारणा रही है कि स्त्री को सदैव पतिव्रता का पालन करना चाहिए। साथ ही पति के लिए भी तद्भाव भक्ति नीति के ही पक्षपाती हैं। जातकर्म संस्कार के बाद दूसरा महत्वपूर्ण संस्कार विवाह है, क्योंकि इसके सम्पन्न हुए बिना कोई भी व्यक्ति न तो समाज के लिए प्रतिष्ठित समझा जाता है और न ही उपयोगी। तुलसी ने शिव–पावर्ती के विवाह का वर्णन रामचरित्रमानस एवं पावर्ती मंगल में किया है। इसमें लग्न, लग्नपत्रिका, बारात, अगवानी, जनवास, गारी, पूजन, कन्यादान आदि का उल्लेख हुआ है, जो आज भी भारतीय समाज में प्रचलित है। इसके साथ ही तुलसी काव्य में तत्कालीन स्त्री–पुरूष के परिधानों का भी उल्लेख मिलता है। काव्य में राम विवाह के

अवसर पर सीता जी की सुन्दर साड़ी का उल्लेख हुआ है, जिसका रंग लाल है इसके साथ ही राम–लक्ष्मण की वेशभूषा का भी वर्णन मिलता है। काव्य में आचार–विचार, खान–पान, आवास अतिथि सत्कार, शिक्षा आदि का भी उल्लेख मलता है। इस काल में शास्त्रविहित एवं लोक–परंपरागत संस्कारों के अतिरिक्त समाज में कुछ विशिष्ट लोक प्रथाओं एवं नीतियों जैसे मौज, गौना, सौलह संस्कार, सती प्रथा, जौहर प्रथा आदि प्रचलित थी। विवेच्य काल का भारतीय समाज साधारणतया दो भागों में विभक्त था भारतीय धर्म और संस्कृति का अनुयायी तथा विदेशी धर्म और संस्कृति पर आधारित। समाज में वर्ण व्यवस्था प्रचलित थी परन्तु शिथिल हो चुकी थी, जिसका मुख्य कारण मुसलमानों का प्रभाव था। तुलसी वर्ण व्यवस्था के समान आश्रम–व्यवस्था के प्रति भी गहरी आस्था व्यक्त करते हैं और आश्रमहीन समाज को आश्रमानुकूल देखना चाहते हैं। इसके लिए उन्होंने रामराज्य और कलियुग का आदर्श प्रस्तुत किया है। विवेच्य साहित्य में प्रतिपादित तत्कालीन नारी की सामाजिक स्थिति ज्यादा अच्छी प्रतीत नहीं होती। पुरूष समाज में अनैतिकता का जोर था। स्त्री जाति का सम्मान और स्वाभिमान कुचल दिया गया था और उसे भोग–विलास की उपकरण मात्र समझा जाने लगा था।

प्रागैतिहासिक काल से भारतीय संस्कृति अविरल धारा के समान प्रवाहमान है और विवेच्यकाल की सांस्कृतिक विचारधारा उसी का विकसित रूप है। मुस्लिम सभ्यता एवं संस्कृति ने देश की राजनैतिक अवस्था को बिल्कुल बदल दिया और समाज पर भी उसका गहरा प्रभाव पड़ा, जिसके कारण परम्परागत भारतीय संस्कृति को गहरा धक्का लगा। संस्कृति एवं समाज के एक सिक्के के दो पहलू हैं एवं संस्कृति के विकास में आदान–प्रदान का भाव निहित होता है। गोस्वामी तुलसीदास अपने काव्य में भारतीय संस्कृति का विशुद्ध

उल्लेख करते हैं। गोस्वामी जी ने तत्कालीन भारतीय सांस्कृतिक इतिहास के अन्तर्गत 'रामचरित्रमानस' की रचना करके भारतीय संस्कृति की रक्षा की। तुलसी की मान्यता थी कि समाप्ति की इकाई व्यस्टि जब तक धर्मनिष्ठ और नैतिक नहीं बनता, तब तक समाज की सुखमयता एंव समृद्धिशीलता सम्भव नहीं है। तुलसीदास जी का मत था कि समाज में बड़ों का आदर, विद्वानों का सम्मान तथा वीरों के प्रति श्रृद्धा सदैव बनी रहनी चाहिए। महाकवि ने अपने महाकाव्य में जिस संस्कृति की व्याख्या की है वह आदमी को मंझधार में अकेला नहीं छोड़ती।

हम कह सकते हैं कि तुलसी के काव्य में तत्कालीन भारत की स्थिति का वर्णन ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। गोस्वामी जी के काव्य में तत्कालीन राजैनतिक स्थिति, सांस्कृतिक स्थिति सामाजिक स्थिति आदि का वर्णन मिलता है। यद्यपि तुलसी का अकबर के साथ कोई परिचय नहीं था, और उन जैसे सन्त को बादशाह के सम्पर्क व सरंक्षण की काई आवश्यकता भी नहीं थी, तथापि इस युग के अनेक प्रतिष्ठित व समर्थ पुरूषों का ध्यान उनकी ओर आकृष्ट हुआ, जिनमें अब्दुर्रहीम खानखाना और राजा मान सिंह के नाम विशेष रूप में उल्लेखनीय है। अब्दुर्रहीम खानखाना की उनकी समय–समय पर दोहो में लिखी–पढ़ी (पत्राचार) होती रहती थी, और इसके प्रति वे बहुत आदर का भाव रखते थे। तुलसी काव्य ग्रन्थ राजाओं के महल से लेकर गरीबों की झोपड़ी तक समान आदर प्राप्त है। जो तत्कालीन भारतीय इतिहास को उजागर करने का एक अत्यन्त उपयोगी साधन बन गया है। वस्तुतः तुलसी काव्य में भारतीय इतिहास का चित्रण किया गया है। अत्यन्त स्वाभाविक रूप में हुआ है। इस प्रकार महाकवि तुलसी का काव्य भारतीय इतिहास जानने का एक सशक्त साधन माना जा सकता है।

अन्त में निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि गोस्वामी तुलसीदास ने लोककल्याणकारी जिन कार्यों की राज्य की और से व्यवस्था दी है, उन कार्यों पर आज के शासन अपना ध्यान केन्द्रित कर लें तो लोक–जीवन में व्याप्त अव्यवस्था एवं विषमता का सहज ही निवारण किया जा सकता है। राज्य या राजा के कर्त्तव्यों से भी आज की सरकारी प्रेरणा ग्रहण कर सकती है। आज के राजनीतिज्ञ सत्ता के पीछे पागल हैं। उनका अपना कोई स्थिर सिद्धान्त और आदर्श नहीं है। वे सत्ता में आने और पर पाने के लिए निर्लज्जतापूर्वक निम्न स्तर पर उतर सकते हैं, जब तक शिक्षा–पद्धति में आमूल–चूल परिवर्तन नहीं किया जाता, आर्य–संस्कृति के आधार पर उसका पुनर्गठन नहीं किया जाता और शिक्षा–क्रम में धर्म को समुचित स्थान नहीं दिया जाता और राजनीति में सत्य, सदाचार और धर्म की यथेष्ट महत्व नहीं दिया जाता, तब तक सत्ता–मोह, पदलोपुता, अर्थ लोलुपता, अवसरवादिता, स्वार्थपरता तथा सिद्धान्तहीन पथ–परिवर्तन की कलुषित राजनीति बदल नहीं सकती।

राजा राम चन्द्र जी मर्यादा पुरूषोत्तम थे और उनकी राजनीति आदर्श राजनीति थी, जो कोई अंशों में आज भी अनुकरणीय है। यदि आज के नेता और राजनीतिज्ञ पाठ और प्रेरणा लेना चाहें तो राम की राजनीति, राजा और शासक के रूप में राम का व्यवहार प्रेरणा का स्रोत सिद्धहो सकता है। राम चन्द्र जी कौशल राज्य से बाहर सुदूर दण्डकवन में थे। वनवास–काल में कौशल की सेना, कौशल का धन–साधन युद्ध के लिए उन्हें सुलभ नहीं था, फिर मीरादासों का उत्पात, राक्षसों द्वारा होने वाला सीमतक्रमण तथा सीता अपहरण उन्हें असहाय नहीं हुए और किष्किंध नरेश सुग्रीव के साथ मैत्री–सम्बन्ध स्थापित करके और वानर–भालूओं की सेना गठित कर उन्होंने लंका का चढ़ाई कर दी। साहस, दृढ़ संकल्प और बाहुबल ने उनका साथ दिया और वे विजयी हुए। सत्ता

के मोह और आसक्ति से दूर रहकर भी श्रीराम चन्द्र ने दीर्घ काल तक ऐसा सुशासन किया, जो आज भी एक आदर्श माना जाता है। अपनी प्राचीन सभ्यता–संस्कृति, नीति और धर्म के मूल्यों की उपेक्षा करके हम कदापि उन्नति नहीं कर सकते।

वर्तमान काल में लोक–कल्याणकारी राज्य की बड़ी चर्चा है। राज्य समग्र जनता के हित कल्याण का ध्येय सामने रखकर काम करता है, किन्तु जो उन्नति शील राष्ट्र लोककल्याणकारी राज्य के ध्येय की दिशा में आगे बढ़े हुए माने जाते हैं, उनमें भी लाखों व्यक्ति बेकारी और भुखमरी की सी अवस्था में येन–केन–प्रकारेण जीवन व्यतीत कर रहे हैं। औद्योगिक उन्नति और आर्थिक समृद्धि होने के बावजूद बहुत से लोग अभावग्रस्थ जीवन व्यतीत करने के लिए विवश होते हैं, किन्तु इसके विपरीत रामराज्य में दुःख–दैन्यका, गरीबी औ बेकारी का कहीं चिह्न तक नहीं दिखायी पड़ता था। शोषण, भ्रष्टाचार, दमन, अत्यचार, उत्पीड़न और संघर्ष आदिका राम–राज्य में एकदम अभाव था। यही कारण है कि राम–राज्य आदर्श राज्य माना जाता है। महात्मा गांधी ने स्वतंत्र भारत में उसी तरह का राम–राज्य की स्थापित करने की कल्पना की थी उसके लिए लोगों को राजा राम और भरत जी की तरह त्याग और तपस्या का जीवन बिताने के लिए तैयार होना चाहिए।

गोस्वमी तुलसीदास भारतीय संस्कृति और सभ्यता के अन्नय भक्त थे। उन्होंने सामाजिक नीति में उसी आदर्श को अपनाया जो सामाजिक संगठन के लिये भारतीय संस्कृति का मूल आदर्श रहा है। उनके काव्य की सामाजिक नीति में समाज को वास्तविक रूप में सुद्रढ़ बनाने के तत्व निहित है। राम ने बसन–बासन चुराने वाले लोग तथा कोलो, किरातो, भीलो ओर वन में जीवन बिताने वालों को समाज में समानभाव आदर दिया। राम ने भ्रात, प्रेम, मात्र प्रेम

तथा मित्रभाव को पूरी तरह से निभाया। उन्होंने सामाजिक नीति आचरण–प्रदान करके मनुष्य की अर्न्तवृत्तियों के सुधारे पर विशेष बल दिया। समाज की प्रत्येक इकाई अर्थात घटक से आत्मशुद्धि की आशा रखते हुए उसमें त्याग, शील, सतभाव, सम आदि गुणों को पूँजीभूत कर किया इससे ही मानव जाति में प्रेम, शान्ती, सौहार्थ एवं एकता की स्थापना हो सकती है।

आज हमारे देश का सामाजिक जीवन अस्त–व्यस्त तथा पथ–भ्रष्ट हो गया है। बौद्धिक्ता और चेतना का वाहक आज का युद्धिजीवी परिश्रम से आयात ज्ञान के तूफान से गुजर रहा है। संदेहों की चट्टानों से कटरा–टकरा कर निराश नयी पीढ़ी जीवन की तलाश में लगी हे। नैतिक संकट, मूल्य–विघटन, राजनीतिक दल–दबल और मानसिक रिक्तता के कारण जीवन सूना–सूना लगने लगा है। आज–विस्मृति की प्रबल धारा में बहते हुए समाज को रोकने वाले श्रेष्ठ आदर्श भी विस्मृत होने जा रहे है। हमारा सम्पूर्ण जीवन एक वृहत पाखण्ड और गोरखधंधा बन गया है। सत्ताधारी के हाथ में संचित प्रचार की शक्ति जन–साधारण की समझने की शक्ति को रोदकर निकलती जा रही है। अनैतिक शक्तियाँ राष्ट्र–जीवन को अपने पैरों के नीचे कुचलने में लगी है। ऐसी स्थिति में सार्वजनिक जीवन को शुद्ध करने का एक ही शक्तिशाली उपाय है कि हम लोकनायक श्रीराम को आदर्श मानकर अपने जीवन में नैतिक, धार्मिक, लोकतांत्रिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों की प्रभुता को स्वीकार करें। सत्यनिष्ठा, पवित्र आचरण, मानवीय प्रेम, त्याग, संयम, उदारता यदि शास्त्रों की खूटी पर ही लटके रहे तो उनसे किसी समाज का कोई कल्याण नहीं हो सकता। गोस्वामी तुलसीदास ने अपने विचारों द्वारा भव्यतर, गुण सम्पन्न और चरित्रवान् आदर्श राजा का चित्रण किया है, जो दुनिया की सारी मानवता को हिलाने के लिए उनके चरित्र के प्रकाशपुंज की ज्योति, देश–देशान्तरों, मानवीय हृदयों, मस्तिष्कों

और काव्य ग्रन्थों के रूप में सदैव प्रज्वलित बनी रहेगी, जिसके प्रकाश में करोड़ों लोगों की थकी हुई जिन्दगी निश्चय ही सुख एवं शान्ति प्राप्त कर कृत–कृत्य होगी।

इससे यह स्पष्ट अनुभूति होती है कि आज के भारत की समाजवादी धारणाओं, लोककल्याणकारी राज्यदर्शों, तटस्थ एवं सामाजिक नीतियों एवं निष्पक्ष जनतांत्रिक नीतियों को गोस्वामी तुलसीदास ने अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त कर दिखाया है। यदि आधुनिक भारत के समाज एवं राजनेता इन नीतियों पर दृष्टिपात करे तो निःसन्देह भारत भूमि पर आदर्श राज्य स्थापित हो सकता है।

*****

''तुलसी काव्य की इतिहास को योगदान''

उद्देश्य :–

किसी देश के विकास के लिए उसके इतिहास का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। इतिहास से ही कोई देश आदि से वर्तमान तक की विभिन्न कालीन परिस्थितियों का अध्ययन करते हुए कुछ उपयोगी निष्कर्षों तक पहुँच सकता है और वे निष्कर्ष ही उसके लिए तरक्की का द्वार उद्घाटित करते हैं। इतिहास के अध्ययन से किसी देश की राजनीतिक, धार्मिक, दार्शनिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक दशाओं को समझा जा सकता हैं और उनकी समीक्षा करते हुए प्रगति के सोपान तैयार किये जा सकते है। परन्तु यहां का साहित्यिक साधन सरल एवं प्रमाणिक साधन माना जा सकता हैं, यही कारण है कि वैदिक साहित्य द्वारा हमारे इतिहास के अनेक अन्धकारपूर्ण पृष्ठों को प्रकाशित किया जा चुका है। वस्तुतः भारत के विभिन्न युगों के इतिहास को समझने के लिए तत्कालीन साहित्य ही अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होता हैं। कुछ साहित्यकार तो समकालीन इतिहास को पूर्ण रूपेण रूपान्तरित कर देते हैं और कुछ ऐतिहासिक घटनाओं को संकेत नाम देते चलते हैं। अतः हर साहित्यकार के विषय में यह नहीं कहा जा सकता है कि उसका साहित्य प्रमाणित ऐतिहासिक तथ्यों को लेकर चला हैं तथापि कुछ इतिहासकार अपने युग की अधिकांश राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, दार्शनिक, धार्मिक एवं आर्थिक घटनाओं को लेकर चलते हैं महाकवि तुलसी ऐसे ही साहित्यकार थे जिनके काव्य में तत्कालीन युग समग्रता के साथ प्रतिबिम्ब हो उठा और इस प्रकार भारतीय इतिहास को उजागर करने का एक अत्यन्त उपयोगी साधन बन गया है। काल की दृष्टि से तुलसी का आर्विभाव मध्यकालीन ऐतिहासिक युग में हुआ था, यह काल हिन्दी के भक्त कवियों का युग था और इन भक्त कवियों ने अत्यन्त सच्चाई के साथ भारतीय इतिहास का चित्रण अपने काव्य में किया हैं। इस दृष्टि से तुलसी का काव्य सर्वश्रेष्ठ माना जा सकता हैं, उनके रामचरितमानस में तो तत्कालीन

समग्र युग ही झांकता हुआ दृष्टिगोचर हो रहा हैं। वस्तुतः तुलसीदास अपने युग के एक महान चिन्तक–भक्त और कवि–कलाकार थे। उनके चिन्तन और उनकी कला का एक सामाजिक सरोकार था। वे अपने अन्तः करण की गहराईयों से यह चाहते थे कि लोक व्यापी अराजकता दूर हो और लोक मर्यादा की प्रतिष्ठा हो। उनकी लोक मर्यादा की अवधारणा निश्चित रूप से तत्कालीन सामन्ती मानवी सम्बन्धों की मर्यादा थी, जिसका मूलाधार वर्णाश्रम व्यवस्था थी। इस प्रकार तुलसीदास का समग्र चिन्तन अन्य सामन्ती समाज के मानव सम्बन्धों का वर्गीय चेतना से अनुशासित था। वस्तुतः तुलसी एक अत्यन्त सूक्ष्मदर्शी कवि थे जिन्होंने अत्यन्त सजगता के साथ भारती समाज संस्कृति, धर्म, दर्शन एवं राजनीति का निरीक्षण किया और उसे आत्मज्ञान करके काव्य रूप में अभिव्यक्त कर दिया था। इस प्रकार महाकवि तुलसी का काव्य भारतीय इतिहास जानने का एक शसक्त साधन बन गया है।

यद्यपि मध्यकालीन इतिहास को अनेक शोधार्थियों ने अपने–अपने साधनों से उजागार करने का प्रयास किया है और अपने–अपने शोध कार्यों द्वारा भारतीय इतिहास में योगदान किया है। मेरा विश्वास है कि इस दृष्टि से तुलसी के काव्य का अध्ययन किया जाए तो अवश्य ही कुछ नूतन ऐतिहासिक तथ्यों तथ्यों की उपलब्धि होगी। इसी विश्वास के साथ मैंने तुलसी काव्य का भारतीय इतिहास में योगदान विषय को शोध के लिए स्वीकार किया है।